03 / 11 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

दिलतख्तनशीन बनने का अनुभव

➢➢ कड़े हिसाब किताब को योगबल से चुक्तू कर रही हूँ

➳ _ ➳ अशरीरी स्थिति में स्थित हो रही हूँ

→ अपने शिव पिता की याद में बैठ रही हूँ

→ मन बुद्धि को स्थिर कर लेती हूँ

■ पिछले 63 जन्मों में किये हुए विकर्मों को भस्म कर रही हूँ

➳ _ ➳ योग अग्नि में सभी हिसाब-किताब को चुकतू कर रही हूँ

➳ _ ➳ हर संकल्प, विकल्प, हर विचार से अपने मन बुद्धि को हटा लिया

➳ _ ➳ मैं अपना सम्पूर्ण ध्यान

→ केवल अपने स्वरूप पर और अपने शिव पिता पर एकाग्र करती हूँ

➳ _ ➳ मन बुद्धि से अब मैं स्पष्ट देख रही हूँ

→ अपने दिव्य ज्योति बिंदु स्वरूप को

→ अपने महाज्योति शिव पिता के स्वरूप को

■ जो मेरे ही समान बिंदु है

■ किंतु गुणों में सिंधु हैं

➳ _ ➳ मैं एक चैतन्य सितारे के समान हूँ

→ अपने जगमग करते स्वरूप को देख रही हूँ

■ अपने शिव पिता के अनन्त तेजोमय स्वरूप को मैं देख रही हूँ

■ विकारों की कट ने मुझ आत्मा को आयरन एजेड बना दिया है

➳ _ ➳ मैं ज्योति बिंदु आत्मा अपने शरीर की कुटिया से बाहर निकलती हूँ

→ अपने शिव पिता की सर्वशक्तियों की ज्वालास्वरूप किरणों से भर रही हूँ

■ अपने ऊपर चढ़ी विकारों की कट को जला रही हूँ

■ योग अग्नि में अपने पापों को भस्म कर रही हूँ

➢➢ एक रूहानी यात्रा पर चल पड़ती हूँ मैं

➳ _ ➳ देह और देह के हर बन्धन से मुक्त हो गई

→ मैं आत्मा चलती जा रही हूँ अति सुखमय आंतरिक यात्रा पर

→ इस रूहानी यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ती चल रही हूँ

➳ _ ➳ मैं चमकती ज्योति

→ प्रकृति के पांचों तत्वों को पार कर चल रही हूँ

→ आकाश से ऊपर फरिश्तों की दुनिया को पार कर चल रही हूँ

■ पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता परमात्मा के पास उनके घर परमधाम

➳ _ ➳ मैं मास्टर बीज रूप आत्मा

→ अब अपने बीज रूप शिव पिता परमात्मा के सम्मुख हूँ

→ बिंदु का बिंदु से मिलन हो रहा है

■ एक बहुत ही खूबसूरत दिव्य आलौकिक नजारा मैं मन बुद्धि रूपी नेत्रों से देख रही हूँ

➳ _ ➳ चारों ओर लाल सुनहरी प्रकाश ही प्रकाश है

→ बिंदु बाप से सर्वशक्तियों की ज्वलंत किरणें आ रही है

→ निरन्तर मुझ बिंदु आत्मा पर पड़ रही हैं

→ मुझ आत्मा के ऊपर विकारों की कट चढ़ी हुई है

■ वो खट इस योग अग्नि में जल कर भस्म हो रही है

➳ _ ➳ विकर्मों का बोझ उतर रही है

→ मैं आत्मा हल्की और चमकदार बनती जा रही हूँ

■ वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ

■ अपनी साकार देह रूपी कुटिया में फिर से वापिस आ रही हूँ

➳ _ ➳ अब मैं भृकुटि पर विराजमान हो रही हूँ

➳ _ ➳ फिर से इस सृष्टि रंग मंच पर अपना पार्ट बजा रही हूँ

➳ _ ➳ कर्मयोगी बन रही हूँ

→ हर कर्म बाबा की याद में रह कर रही हूँ

→ कर्म करके सेकण्ड में देह से उपराम हो रही हूँ

- बीज स्वरूप में स्थित हो कर अपने बीज रूप शिव पिता परमात्मा के पास जा रही हूँ

➳ _ ➳ स्वयं में योग का बल निरन्तर जमा कर रही हूँ

→ हर कड़े से कड़े हिसाब- किताब को योगबल से चुकतू कर रही हूँ

- अब बहुतकाल के बन्धनमुक्त, बहुतकाल के जीवनमुक्त पद को पा रही हूँ
- योद्धा जीवन तो बचपन का जीवन है वो अब समाप्त होगयी
- अब तो स्वराज्य-अधिकारी बन गई
- बाप के दिलतख्तनशीन बन गई